



किरन



अरी किरन तू उठकर इतनी
जल्दी आज चली आई।
मैं तो बिस्तर में से अपने
अब तक निकल नहीं पाई।

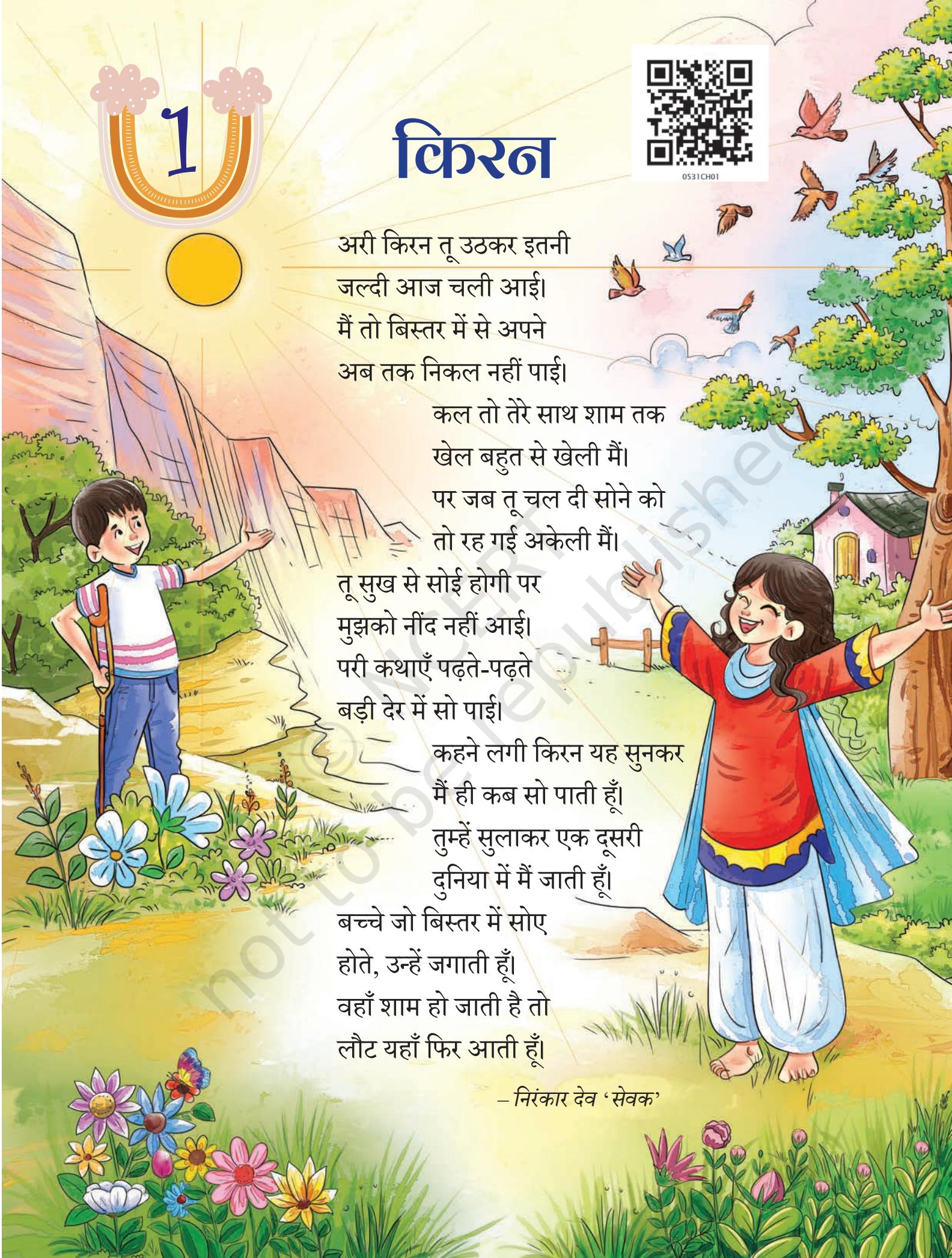
कल तो तेरे साथ शाम तक
खेल बहुत से खेली मैं।
पर जब तू चल दी सोने को
तो रह गई अकेली मैं।

तू सुख से सोई होगी पर
मुझको नींद नहीं आई।
परी कथाएँ पढ़ते-पढ़ते
बड़ी देर में सो पाई।

कहने लगी किरन यह सुनकर
मैं ही कब सो पाती हूँ।
तुम्हें सुलाकर एक दूसरी
दुनिया में मैं जाती हूँ।

बच्चे जो बिस्तर में सोए
होते, उन्हें जगाती हूँ।
वहाँ शाम हो जाती है तो
लौट यहाँ फिर आती हूँ।

– निरंकार देव ‘सेवक’





बातचीत के लिए

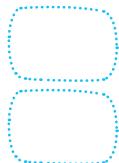
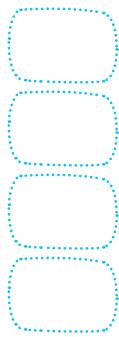
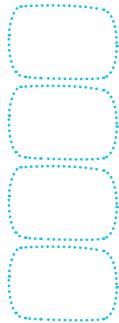
- आपको कैसे पता चलता है कि सुबह हो गई है?
- ऐसे कौन-कौन से कार्य हैं जो सूर्य के प्रकाश के बिना संभव नहीं हैं?
- सुबह और शाम में से आपको कौन-सा समय अधिक अच्छा लगता है और क्यों?



पाठ से

सही उत्तर पर सूरज का चित्र (✿) बनाइए—

- किरन के अनुसार वह मुख्य रूप से कौन-सा काम करती है?
 - सोते बच्चों को जगाना
 - खेलते बच्चों को सुलाना
 - बच्चों के साथ खेलना
 - परी कथाएँ पढ़ना-पढ़ना
- बालिका को बहुत देर तक नींद क्यों नहीं आई?
 - क्योंकि वह देर रात तक खेल रही थी।
 - क्योंकि वह पढ़ रही थी।
 - क्योंकि उसे बहुत गरमी लग रही थी।
 - क्योंकि वह घूमने गई थी।
- जब किरन आई, उस समय बालिका क्या कर रही थी?
 - वह सो रही थी।
 - वह खेल रही थी।
 - वह गीत गा रही थी।
 - वह पढ़ और लिख रही थी।





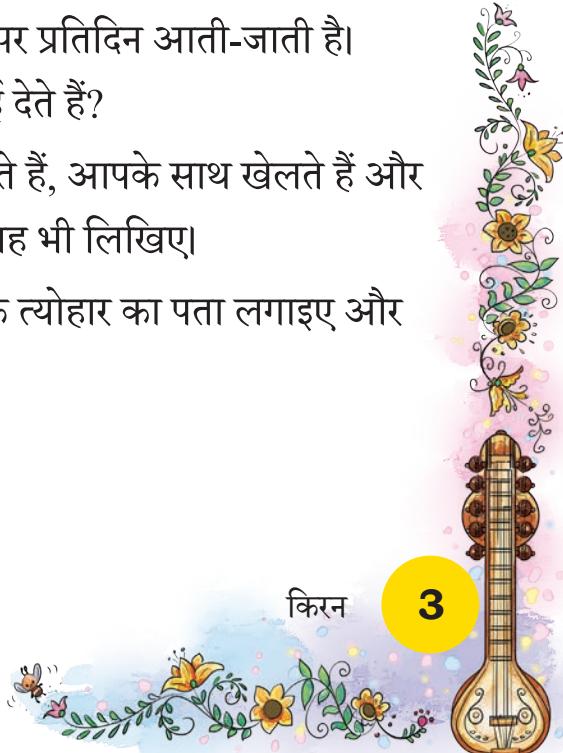
सोचिए और लिखिए

1. किरन ने दूसरी दुनिया में जाने की बात क्यों कही होगी?
2. “वहाँ शाम हो जाती है तो
लौट यहाँ फिर आती हूँ”
उपर्युक्त पंक्तियों में ‘वहाँ’ और ‘यहाँ’ शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुए हैं?
3. प्रकृति हमें प्रकाश, फल, फूल, लकड़ी, वायु, पानी और बहुत कुछ देती है। हम प्रकृति के लिए क्या-क्या कर सकते हैं? सोचिए और अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।
4. कविता की किन पंक्तियों से पता चलता है कि किरन बालिका के साथ दिन भर रहती है?
उन पंक्तियों को चुनकर लिखिए।



समझ और अनुभव

1. “कहने लगी किरन यह सुनकर
मैं ही कब सो पाती हूँ
तुम्हें सुलाकर एक दूसरी
दुनिया में मैं जाती हूँ”
किरन कितना परिश्रम करती है, यहाँ से वहाँ नियत समय पर प्रतिदिन आती-जाती है।
आपको अपने आस-पास कौन-कौन परिश्रम करते दिखाई देते हैं?
2. वे कौन-कौन से लोग हैं जो किरन की भाँति आपको जगाते हैं, आपके साथ खेलते हैं और
प्रोत्साहित करते हैं? उनके लिए आप क्या-क्या करते हैं, यह भी लिखिए।
3. आपके घर या प्रदेश में सूर्य अथवा चाँद से जुड़े किसी एक त्योहार का पता लगाइए और
उसके बारे में लिखिए।





अनुमान और कल्पना

- यदि किरन कभी न आए या न जाए तो क्या होगा?
- यदि आपको किरन के साथ दूसरी दुनिया में जाने का अवसर मिले तो आप कहाँ जाना चाहेंगे और क्यों?



भाषा की बात

- “कल तो तेरे साथ शाम तक
खेल बहुत से खेली मैं।”

‘शाम’ के लिए हम संध्या, साँझ, सायं जैसे शब्दों का भी प्रयोग करते हैं। मिलते-जुलते या समान अर्थ वाले ऐसे शब्दों को समानार्थी शब्द कहते हैं।

नीचे दिए गए शब्दों के समान अर्थ वाले शब्दों पर धेरा बनाइए—

• नभ	आकाश, अंबर, नभचर
• हवा	वायु, व्योम, पवन
• पेड़	विशाल, वृक्ष, तरु
• फूल	कुसुम, सरिता, सुमन
• दुनिया	भूमि, संसार, विश्व

- दिए गए रिक्त स्थानों की पूर्ति रेखांकित शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्दों से कीजिए—

- (क) मैं आज यह परी-कथा पढ़ूँगा, आप पढ़ लेना।
- (ख) मैं जब तक खेलने के लिए आई तब तक हरिका चली थी।
- (ग) वह आया और शाम को चला गया।
- (घ) मेरे जागने और का समय निश्चित है।

3. “चिड़ियाँ गाती गीत चलीं

हवा चली, खिल उठे पेड़ सबा।”

इन पंक्तियों को सामान्य बातचीत के रूप में लिखा जाए तो ऐसे लिखेंगे—

“चिड़ियाँ गीत गाती हुई उड़ रही थीं, हवा चलने लगी, हवा के चलने से पेड़-पौधों की पत्तियाँ भी हिलने लगीं जैसे कि वे प्रसन्नता से झूम रही हों।”

आप भी सामान्य ढंग से कही गई बात को कविता का रूप दे सकते हैं। उदाहरण के लिए, इन पंक्तियों को पढ़िए—

“चंद्रमा चमक रहा है, तारे भी चमक रहे हैं, आकाश में प्रकाश ही प्रकाश हो गया है।”

आइए, इन पंक्तियों को कविता का रूप देने का प्रयास करते हैं—

“चंदा चमका तारे चमके

चमका सारा अंबर”

आप भी सामान्य रूप से कही गई किसी बात को कविता के रूप में लिखने का प्रयास कीजिए।



आपकी बातचीत

कविता में बालिका, किरन से बात कर रही है। यदि आपको भी नीचे दिए गए विकल्पों में से किसी से बात करने का अवसर मिले तो आप किससे बात करना चाहेंगे? अपने चुने गए विकल्प के सामने सही का चिह्न (✓) लगाइए—

वृक्ष

पानी

चाँद

पत्ता

हवा

मिट्टी

तितली

बादल

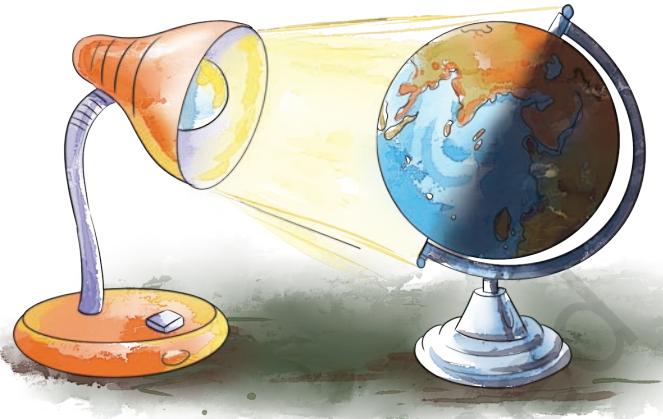
- अपने सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए कि आप इनसे क्या बातचीत करेंगे?

- अपने सहपाठियों की सहायता से इस बातचीत का अभिनय भी कीजिए।



इसे भी जानिए

हमारी धरती गेंद की तरह गोल है। वह अपनी धुरी पर धूमती हुई सूर्य की परिक्रमा करती रहती है। सूर्य निरंतर प्रकाशित रहता है। पृथ्वी का जो भाग सूर्य की ओर आ जाता है, वहाँ दिन हो जाता है। चित्र में यदि बत्ती को सूर्य मान लें और गोलक को पृथ्वी तो प्रकाश गोलक के जिस भाग पर पड़ रहा है, वहाँ दिन है और दूसरे अँधेरे भाग में रात है।



अधिक जानने के लिए आप निम्न वीडियो लिंक पर भी जा सकते हैं—

<https://www.youtube.com/watch?v=NoCXddI2sg8&t=1s>

स्रोत – वीडियो — रात और दिन, एन.सी.ई.आर.टी. ऑफिसियल यूट्यूब चैनल



पुस्तकालय एवं अन्य स्रोत

आपको ज्ञात ही होगा कि सुनीता विलियम्स भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री हैं। शिक्षकों एवं अभिभावकों की सहायता से आप सुनीता विलियम्स के बारे में पुस्तकालय एवं अन्य स्रोतों से जानकारी एकत्रित कीजिए।

पेड़ का जादू

बुआ के घर में पेड़ था।

पेड़ पर गिलहरी देखकर मैंने कहा,
‘बुआ! आपने गिलहरी कहाँ से
खरीदी? मैं भी लूँगा। उसे पालूँगा।’

बुआ ने कहा,

‘मेरे घर में पेड़ है। पेड़ के होने से गिलहरी
अपने आप आ जाती है। पेड़ पर देखो।
चिड़ियाँ बैठी हैं। चिड़ियों को मैंने
नहीं पाला। पेड़ होने से वे आ गईं।
तुम अपने घर में पेड़ उगा लो तो गिलहरी
आ जाएगी। चिड़िया आएगी। बाहर धूप
होगी तो पेड़ के नीचे छाया आ जाएगी।
तब छाया में खेलना अच्छा लगेगा।’

— विनोद कुमार शुक्ल





0531CH02

उज्जैन की प्राचीन और ऐतिहासिक नगरी के बाहर एक लंबा-चौड़ा मैदान था। यहाँ-वहाँ टीले थे। एक दिन लड़कों का एक झुंड वहाँ खेल रहा था। एक लड़का कूदता-भागता एक टीले पर चढ़ गया। अचानक वह ठोकर खाकर गिर पड़ा। उसने इधर-उधर देखा कि किस चीज से ठोकर लगी है। उसको एक बड़े चिकने पत्थर के अलावा और कुछ नहीं दिखा। वह उठकर गया और अपने मित्रों को बुलाकर वह शिला दिखाई। फिर शान से उस पर बैठकर बोला, “यह सिंहासन है मेरा। मैं राजा हूँ और तुम सब मेरे दरबारी। तुम अपनी-अपनी फरियाद लेकर आओ। फिर मैं उनका फैसला करूँगा।”



दूसरे लड़कों को यह खेल पसंद आया। वे एक-एक करके आते और कोई काल्पनिक फरियाद सुनाते। फिर गवाह बुलाए जाते। उनकी गवाही ली जाती। उसके बाद राजा बना हुआ लड़का उनसे सवाल करता और अपना फैसला सुनाता।

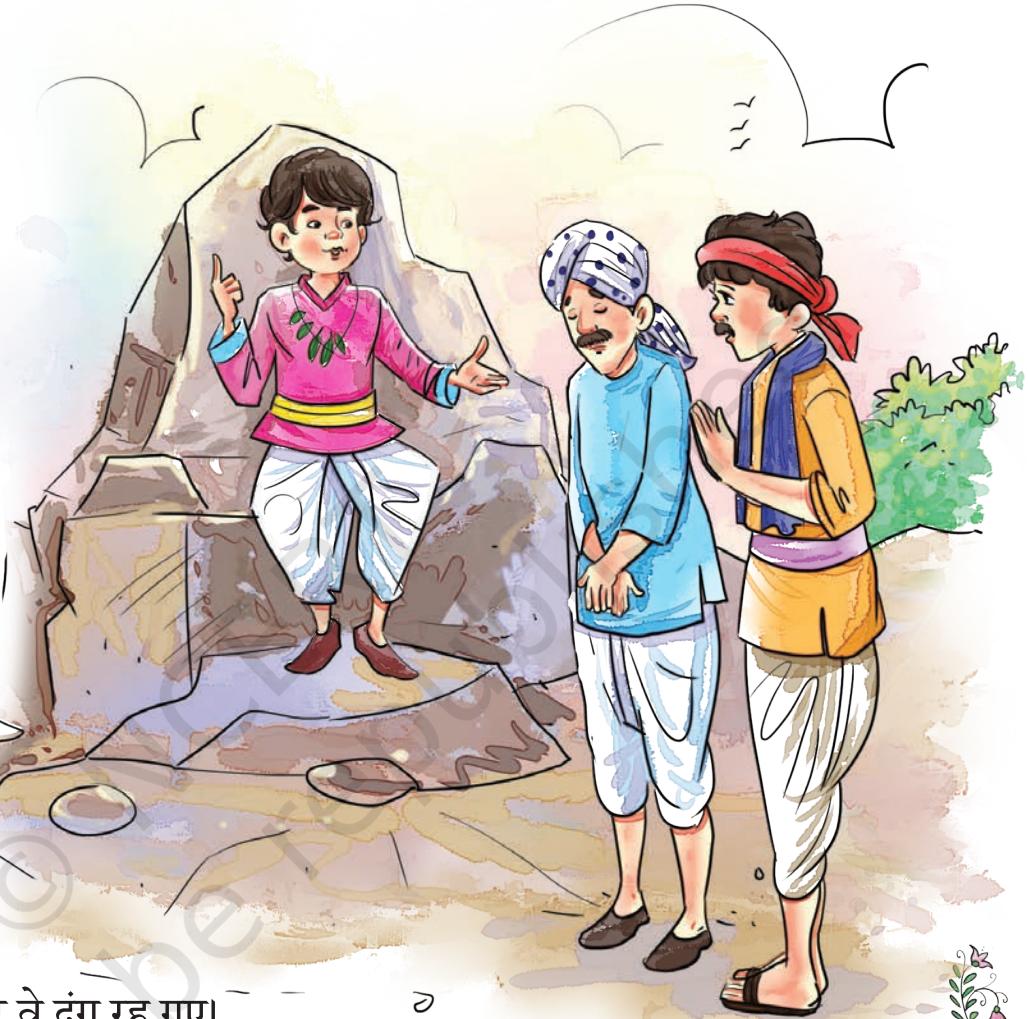
इस खेल में उनको इतना आनंद आया कि वे रोज ही यह खेल खेलने लगे। शिकायतें सुनी जातीं, अपराधी पेश किए जाते, बयान लिए जाते, फिर शिला पर बैठा हुआ लड़का अपना फैसला सुनाता।

बात इधर-उधर फैलने लगी। लोग लड़के की न्याय-बुद्धि की चर्चा करने लगे और कहने लगे कि अवश्य ही उस लड़के में कोई दैवी शक्ति है।

एक दिन दो
किसानों के बीच जमीन
को लेकर झगड़ा उठ
खड़ा हुआ। मामला
गंभीर था। टीलेवाले
लड़के की इतनी चर्चा
थी कि वे राजा के
दरबार में जाने के बजाय
उसी के पास गए और
उसको अपने झगड़े के
बारे में बताया। लड़के
ने बड़ी गंभीरता से दोनों
किसानों के बयान सुने।
उसके बाद उसने जो
फैसला दिया, उसे सुनकर वे दंग रह गए।

उस दिन के बाद से तो नगर के सभी लोग अपनी फरियाद लेकर यहाँ आने लगे। राजा के दरबार में कोई न जाता। और ऐसा कभी नहीं हुआ कि लड़के के फैसले से उन्हें संतोष न हुआ हो।

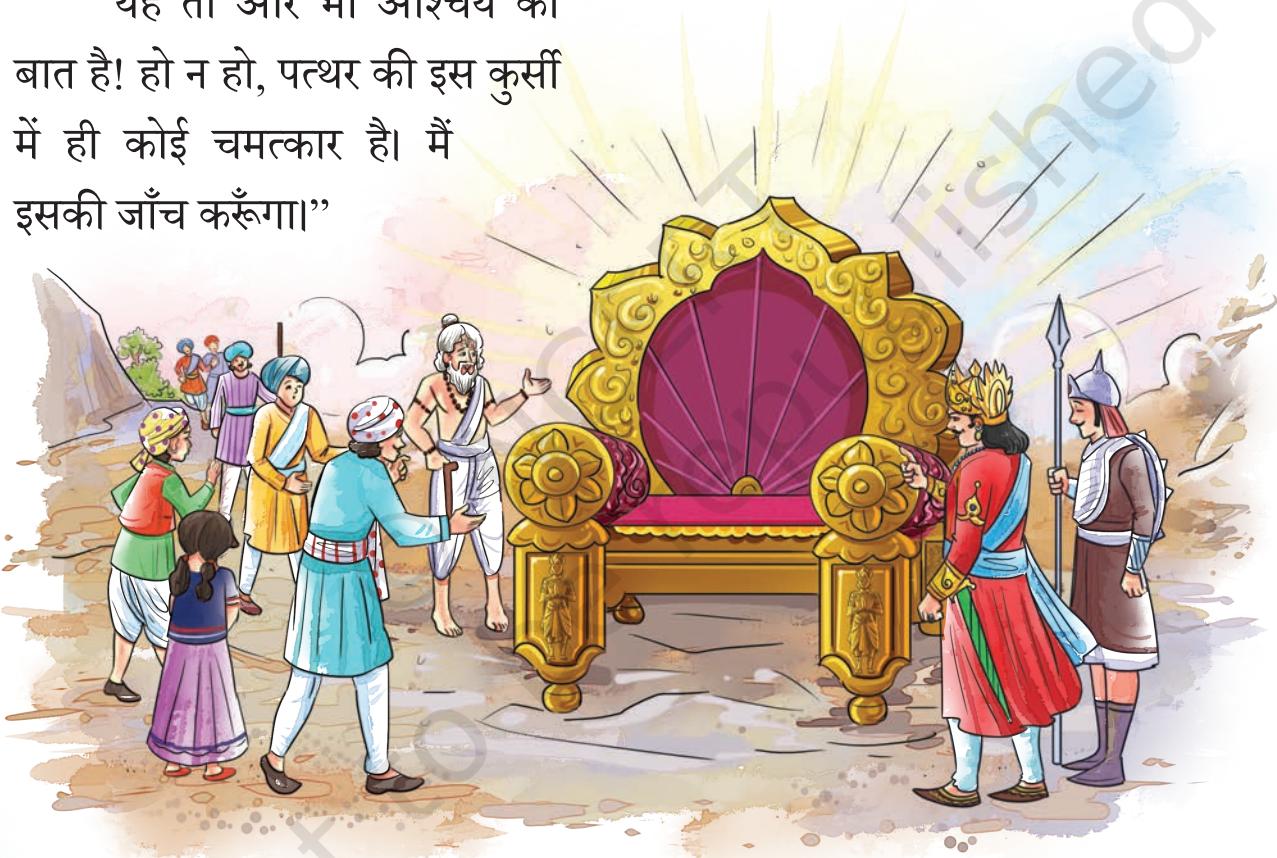
धीरे-धीरे यह बात राजा के कानों तक पहुँची। उसको बहुत क्रोध आया। उसने गरजकर कहा, “उस छोकरे की यह मजाल कि अपने को मुझसे अच्छा न्यायकर्ता समझे? मैं इन किस्सों में विश्वास नहीं करता। मैं खुद जाकर देखूँगा।”



ऐसा कहकर राजा अपने लाव-लश्कर के साथ उस मैदान में पहुँचा जहाँ लड़के अपना प्रिय खेल खेल रहे थे। बड़ी देर तक राजा उनका खेल देखता रहा। वह स्तंभित रह गया। उसने अपने मंत्री से कहा, “लड़का सचमुच बहुत बुद्धिमान है। इतनी छोटी उम्र में इतनी बुद्धि का होना आश्चर्य की बात है। इसकी न्याय-बुद्धि के आगे तो बड़े-बड़ों को लोहा मानना पड़ेगा।”

उसी समय किसी ने राजा को बताया, “लेकिन महाराज, यह तो रोज वाला लड़का नहीं है। वह बीमार हो गया है, इस कारण कोई नया ही लड़का टीले पर बैठा है।”

“यह तो और भी आश्चर्य की बात है! हो न हो, पत्थर की इस कुर्सी में ही कोई चमत्कार है। मैं इसकी जाँच करूँगा।”



राजा का इशारा पाते ही उस स्थान को खोदकर पत्थर को बाहर निकाला गया। राजा ने देखा कि वह पत्थर नहीं, बहुत ही सुंदर सिंहासन था। उस पर बहुत बारीक और खूबसूरत मूर्तियाँ खुदी हुई थीं। उसके चारों पायों पर चार देवदूतों की मूर्तियाँ बनी हुई थीं। चारों ओर खबर फैल गई। बात ही बात में वहाँ अच्छी खासी भीड़ जमा हो गई। विद्वान पंडितों



ने बताया कि वह कोई ऐसा-वैसा सिंहासन नहीं था — सदियों पुराना, राजा विक्रमादित्य का सिंहासन था। राजा विक्रमादित्य अपने न्याय और विवेक के लिए बहुत प्रसिद्ध थे।

राजा ने आज्ञा दी कि सिंहासन को ले जाकर राजदरबार में रख दिया जाए। उसने कहा, “मैं इस पर बैठकर अपनी प्रजा की फरियाद सुनँगा और उनका फैसला करूँगा।” अगले दिन राजा दरबार में आया और सीधे उस सिंहासन की ओर बढ़ा। वह उस पर बैठने ही वाला था कि किसी की आवाज सुनाई दी, “ठहरो!”

राजा ने रुककर चारों ओर देखा। कोई नजर नहीं आया। वह फिर सिंहासन की ओर बढ़ा। फिर इसी प्रकार आवाज आई, “ठहरो!” इस बार राजा ने आश्चर्य से देखा कि सिंहासन के एक पाये पर बनी मूर्ति बोल रही है।

मूर्ति ने कहा, “क्या तुम इस सिंहासन पर बैठने योग्य हो? क्या तुम्हें पूरा विश्वास है कि तुमने कभी चोरी नहीं की है?”

राजा ने लज्जा से सर झुका लिया। “यह सच है कि हाल में ही मैंने अपने एक दरबारी की जमीन पर कब्जा कर लिया था क्योंकि मैं उससे नाराज हो गया था।”

“तब तो तुम इसके योग्य नहीं हो”, मूर्ति ने कहा। “तुमको तीन दिन तक प्रायश्चित करना होगा।” यह कहकर मूर्ति अपने पंख फैलाकर आकाश में उड़ गई।

राजा ने तीन दिन तक उपवास किया और प्रार्थना की। चौथे दिन वह फिर दरबार में आया। ज्यों ही सिंहासन पर बैठने लगा, दूसरी मूर्ति ने कहा, “ठहरो! तुम विश्वास के साथ कह सकते हो कि तुमने कभी झूठ नहीं बोला?”

राजा सकपकाया। झूठ तो उसने किसी न किसी मुसीबत से बचने के लिए कई बार बोला था। राजा पीछे हट गया। दूसरी मूर्ति भी पंख फैलाकर आकाश में उड़ गई।

राजा ने तीन दिन तक फिर उपवास और पूजा-पाठ किया। तीसरी बार वह फिर सिंहासन पर बैठने के लिए आगे बढ़ा। हिचकिचाते हुए वह आगे बढ़ा। वह बैठने ही वाला था कि तीसरी मूर्ति ने पूछा, “बैठने के पहले यह बताओ कि क्या तुमने कभी किसी को चोट नहीं पहुँचाई है?”

राजा पीछे हट गया। तीसरी मूर्ति भी अपने पंख फैलाकर उड़ गई। फिर तीन दिन तक उपवास और प्रार्थना करने के बाद राजा सिंहासन की ओर बढ़ा। उसके पैर लड़खड़ा गए। चौथी मूर्ति ने कहा, “ठहरो! जो लड़के इस सिंहासन पर बैठते थे, वे भोले-भाले थे। उनके मन में कलुष नहीं था। अगर तुमको विश्वास है कि तुम इस योग्य हो तो इस सिंहासन पर बैठ सकते हो।”

राजा बड़ी देर तक सोचता रहा। फिर उसने मन ही मन कहा, “अगर एक लड़का इस पर बैठ सकता है तो भला मैं क्यों नहीं बैठ सकता हूँ। मैं राजा हूँ। मुझसे ज्यादा धनवान, बलवान और बुद्धिमान भला और कौन होगा? मैं अवश्य इस सिंहासन पर बैठने योग्य हूँ।”



यह कहकर राजा सिंहासन की ओर दृढ़ कदमों से बढ़ा। लेकिन उसी समय चौथी मूर्ति पंख फैलाकर सिंहासन समेत आकाश में उड़ गई।

— लीलावती भागवत

(राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित ‘स्वर्ग की सैर तथा अन्य कहानियाँ’ पुस्तक से साभार)

न्याय की कुसरी

13





बातचीत के लिए

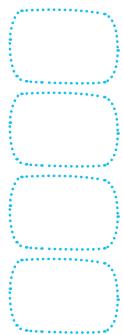
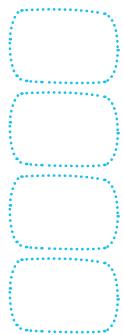
- आपका प्रिय खेल कौन-सा है? आप उसे कैसे खेलते हैं?
- क्या आपने कभी किसी समस्या का समाधान किया है? अपना अनुभव साझा कीजिए।
- यदि आप राजा के स्थान पर होते और आपको लड़के के बारे में पता चलता तो आप क्या करते?
- लड़के के अंदर ऐसे कौन-कौन से गुण होंगे जिनके कारण वह सिंहासन पर बैठ पा रहा था?



पाठ से

नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर के आगे तरे का चिह्न (*) बनाइए। एक से अधिक विकल्प भी सही हो सकते हैं—

- राजा को लड़के द्वारा न्याय करने के विषय में कैसे पता चला?
 - लड़के द्वारा की गई शरारतों को सुनकर
 - लोगों द्वारा लड़के के न्याय की प्रशंसा सुनकर
 - लड़के द्वारा अपने न्याय की बुराई सुनकर
 - मंत्रियों द्वारा लड़के की बुद्धि की प्रशंसा सुनकर
- राजा को सबसे अधिक आश्चर्य किस बात से हुआ?
 - बच्चे खेल-खेल में न्याय कर रहे थे।
 - लोग राजा के दरबार में नहीं आ रहे थे।
 - सिंहासन पर बैठने वाला लड़का सही न्याय करता था।
 - स्वयं सिंहासन में ही कोई चमत्कारी शक्ति विद्यमान थी।



3. लड़कों को यह खेल इतना अच्छा क्यों लगा कि वे प्रतिदिन इसे खेलने लगे?

- (क) क्योंकि वे राजा जैसा बनने का आनंद ले रहे थे।
- (ख) क्योंकि यह अन्य खेलों से अधिक मनोरंजक था।
- (ग) क्योंकि उन्हें न्याय करने का अनुभव अच्छा लगा।
- (घ) क्योंकि इस खेल से वे नगर भर में प्रसिद्ध हो गए थे।

4. राजा ने उपवास और प्रायश्चित क्यों किया?

- (क) ताकि वह सिंहासन पर बैठने के योग्य बन सके।
- (ख) क्योंकि उसे अपने कर्मों पर पछतावा था।
- (ग) क्योंकि मूर्तियों ने उसे ऐसा करने के लिए कहा था।
- (घ) क्योंकि जनता ने उसे ऐसा करने को कहा था।



सोचिए और लिखिए

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए—

1. सभी लड़के सिंहासन पर बैठ पा रहे थे लेकिन राजा नहीं बैठ पाया। ऐसा क्यों?
2. क्या राजा को प्रायश्चित करने के बाद सिंहासन पर बैठने का अधिकार मिलना चाहिए था? अपने उत्तर का कारण भी बताइए।
3. दोनों किसानों ने अपने झगड़े के निपटारे के लिए राजा के दरबार में जाने के बजाय लड़के के पास जाने का फैसला क्यों किया?
4. चौथी मूर्ति सिंहासन के साथ आकाश में क्यों उड़ गई?
5. इस कहानी को एक नया शीर्षक दीजिए और बताइए कि आपने यह शीर्षक क्यों चुना?



अनुमान और कल्पना

- कहानी में सिंहासन की मूर्तियाँ उड़कर किसी और जगह चली जाती हैं। वे कहाँ जाती होंगी और वहाँ क्या करती होंगी?
- यदि इस कहानी के अंत में राजा सिंहासन पर बैठने में सफल हो जाता तो क्या होता?



भाषा की बात

नीचे दी गई पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए—

- यह तो और भी आश्चर्य की बात है हो न हो पत्थर की इस कुर्सी में ही कोई चमत्कार है मैं इसकी जाँच करूँगा
- ऊपर दिए गए वाक्यों को ध्यान से देखिए। आपको इसका अर्थ समझने में कुछ कठिनाई हो रही है न? अब इसी वाक्य को एक बार फिर पढ़िए—
- “यह तो और भी आश्चर्य की बात है! हो न हो, पत्थर की इस कुर्सी में ही कोई चमत्कार है। मैं इसकी जाँच करूँगा!”
- अब आपको इन वाक्यों का अर्थ और भाव ठीक-ठीक समझ में आ रहा होगा।
- इसका कारण है कुछ विशेष चिह्न, जैसे— “ ” , । !
- इस प्रकार के चिह्नों को ‘विराम चिह्न’ कहते हैं। विराम चिह्नों से पता चलता है कि लिखे हुए वाक्यों में कहाँ ठहराव है और उनका क्या भाव है।

अब नीचे दिए गए वाक्यों में उचित स्थानों पर विराम चिह्न लगाइए—

- चौथी मूर्ति ने कहा ठहरो जो लड़के इस सिंहासन पर बैठते थे वे भोले भाले थे उनके मन में कलुष नहीं था अगर तुमको विश्वास है कि तुम इस योग्य हो तो इस सिंहासन पर बैठ सकते हो
- राजा बड़ी देर तक सोचता रहा फिर उसने मन ही मन कहा अगर एक लड़का इस पर बैठ सकता है तो भला मैं क्यों नहीं बैठ सकता हूँ मैं राजा हूँ मुझसे ज्यादा धनवान बलवान और बुद्धिमान भला और कौन होगा मैं अवश्य इस सिंहासन पर बैठने योग्य हूँ

2. “तीसरी मूर्ति भी उड़ गई।” इस वाक्य के आधार पर प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) इस वाक्य में संज्ञा शब्द कौन-सा है?

.....

(ख) कौन-सा शब्द इस संज्ञा शब्द के गुण या विशेषता को बता रहा है?

.....

3. कहानी में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। इनमें विशेषण शब्द पहचानकर उनके नीचे रेखा खींचिए—

(क) एक दिन लड़कों का एक झुंड वहाँ खेल रहा था।

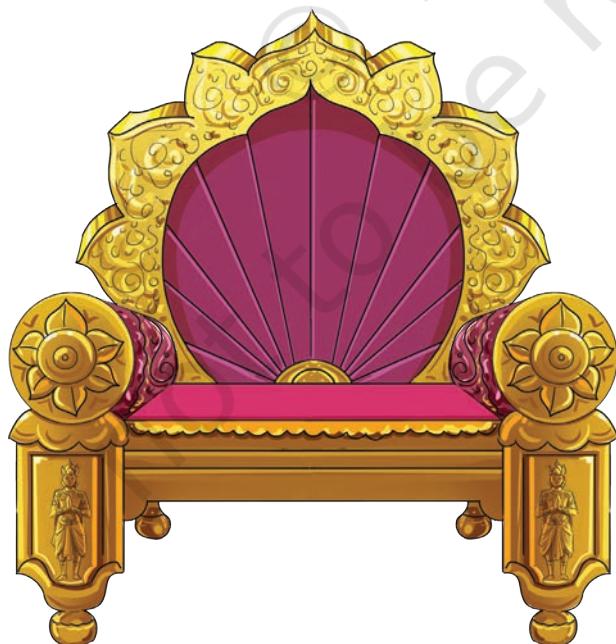
(ख) उज्जैन की प्राचीन और ऐतिहासिक नगरी के बाहर एक लंबा-चौड़ा मैदान था।

(ग) इतनी छोटी उम्र में इतनी बुद्धि का होना आश्चर्य की बात है।

(घ) राजा ने देखा कि वह पत्थर नहीं, बहुत ही सुंदर सिंहासन था।

(ङ) बात ही बात में वहाँ अच्छी खासी भीड़ जमा हो गई।

4. आपमें कौन-कौन सी विशेषताएँ होनी चाहिए जिससे आप कहानी के सिंहासन पर बैठ सकें? लिखिए—



.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....





पाठ से आगे

- कहानी में गाँव वाले न्याय करवाने या झगड़े सुलझाने बच्चों के पास जाया करते थे। आप अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए किन-किनके पास जाते हैं? आप उन्हीं के पास क्यों जाते हैं?
- क्या कभी ऐसा हुआ है कि किसी ने आपके साथ अन्याय किया हो? आपने उस स्थिति का सामना कैसे किया?



पुस्तकालय एवं अन्य स्रोत

आपने जो कहानी पढ़ी, वह हमारे देश की सैकड़ों वर्ष पुरानी एक पुस्तक पर आधारित है। उस पुस्तक का नाम है सिंहासन बत्तीसी।

इस पुस्तक में राजा भोज को भूमि में गड़ा राजा विक्रमादित्य का सिंहासन मिलता है जिसमें बत्तीस मूर्तियाँ जड़ी होती हैं। प्रत्येक मूर्ति राजा भोज को राजा विक्रमादित्य की एक कहानी सुनाती है। इस पुस्तक की प्रत्येक कहानी बहुत रोचक है।

- पुस्तकालय में से यह पुस्तक खोजकर पढ़िए और अपनी मनपसंद कहानी कक्षा में सुनाइए।
- सिंहासन बत्तीसी की तरह भारत में अनेक पारंपरिक कहानियाँ प्रचलित हैं, जैसे – पंचतंत्र, हितोपदेश, जातक कथाएँ आदि। इन्हें भी पुस्तकालय से ढूँढ़कर पढ़िए।



पता लगाकर कीजिए

“राजा ने आज्ञा दी कि सिंहासन को ले जाकर राजदरबार में रख दिया जाए।”

सिंहासन एक विशेष प्रकार की भव्य कुर्सी हुआ करती थी जिस पर राजा-महाराजा बैठा करते थे। आज भी हम बैठने के लिए अनेक प्रकार की वस्तुओं का उपयोग करते हैं। इनमें से कुछ वस्तुओं के चित्र दिए गए हैं। इनका वर्णन कीजिए और यह भी लिखिए कि आपकी भाषा में इन्हें क्या कहते हैं।

वस्तु



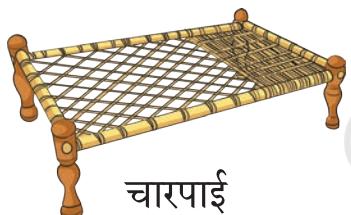
चत्राई



दरी



मूढ़ा



चारपाई



पीढ़ा



टाट पट्टी

वर्णन

यह घास, बाँस या प्लास्टिक से बनी होती है। इसे भूमि पर बिछाकर बैठा जाता है।

यह मोटे कपड़े या सूती धागों से बनी होती है। यह उत्सवों या सामाजिक कार्यक्रमों में उपयोग की जाती है।

आपकी भाषा में नाम





बूझो तो जानें



आज हम आपके लिए लाए हैं भारत की अलग-अलग भाषाओं की विभिन्न पहेलियाँ। हो सकता है कि इनमें से कुछ को पढ़कर आपको लगे — अरे! ये पहेली तो मेरे घर पर भी बूझी जाती है। तो आइए, बूझते हैं ये रोचक पहेलियाँ —

गोंड पहेली

न तो खाय न तो पीवैह,
संग मारेगत है।
(न खाती है, न पीती है,
संग-संग चलती है)

निमाड़ी पहेली

हरो माथणो, लाल पेट,
रस पी लेव भर-भर पेटा
(हरे मटके का लाल पेट,
रस पी लो भर-भर पेट)

मालवी पहेली

एक जानवर ऐसो,
जिकी दूम पे पैसो।
(एक जानवर ऐसा,
जिसकी दुम पर पैसा)

बुंदेली पहेली

एक लकड़ी की ऐसी कहानी,
ऊमें लुको है मीठो पानी।
एक लकड़ी की ऐसी कहानी,
उसमें छिपा है मीठा पानी)

बघेली पहेली

एक दिया
सबतर उंजियारा
(एक दीपक से
चारों ओर उजियारा)



‘तुम्हारा नाम क्या है?’
‘मेरा नाम बघेला है।’



मेरा न्याय



- अपनी कक्षा से किन्हीं दो ऐसी समस्याओं को चुनिए जिन पर न्याय किया जाना है।
- कक्षा को दो समूहों में विभाजित कीजिए।
- दोनों समूह एक समस्या लेकर उस पर विचार करेंगे।
- तत्पश्चात दोनों समूह एक-एक कर नाटक-मंचन के द्वारा समस्या को सुलझाएँगे।
- दर्शक समूह प्रतिपुष्टि प्रदान करेंगे।

क्र.सं.	प्रतिपुष्टि के बिंदु	अंक				
		1	2	3	4	5
(क)	प्रस्तुतीकरण					
(ख)	पात्र संवाद					
(ग)	समस्या का समाधान					
(घ)	पात्रों का आत्मविश्वास					

शिक्षण-संकेत – शिक्षक, इस गतिविधि में समस्याओं के चुनाव, संवाद-रचना, नाटक-मंचन और कक्षा में समूहों को व्यवस्थित करने में बच्चों की सहायता करें। यह भी सुनिश्चित करें कि कक्षा का प्रत्येक बच्चा इस गतिविधि में सम्मिलित हो।

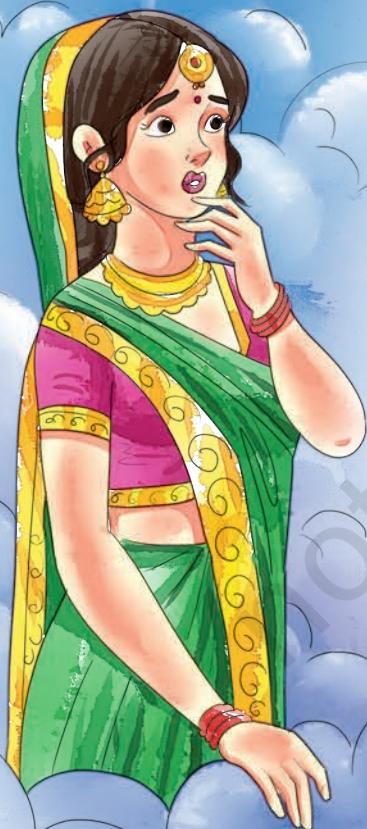




चाँद का कुरता



0531CH03



हठ कर बैठा चाँद एक दिन, माता से यह बोला,
“सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला।
सन-सन चलती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूँ,
ठिठुर-ठिठुरकर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।
आसमान का सफर और यह मौसम है जाड़े का,
न हो अगर तो ला दो कुरता ही कोई भाड़े का।”
बच्चे की सुन बात कहा माता ने, “अरे सलोने!
कुशल करें भगवान, लगें मत तुझको जादू-टोनो।





जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ,

एक नाप में कभी नहीं तुझको देखा करती हूँ।

कभी एक अंगुल-भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा,

बड़ा किसी दिन हो जाता है और किसी दिन छोटा।

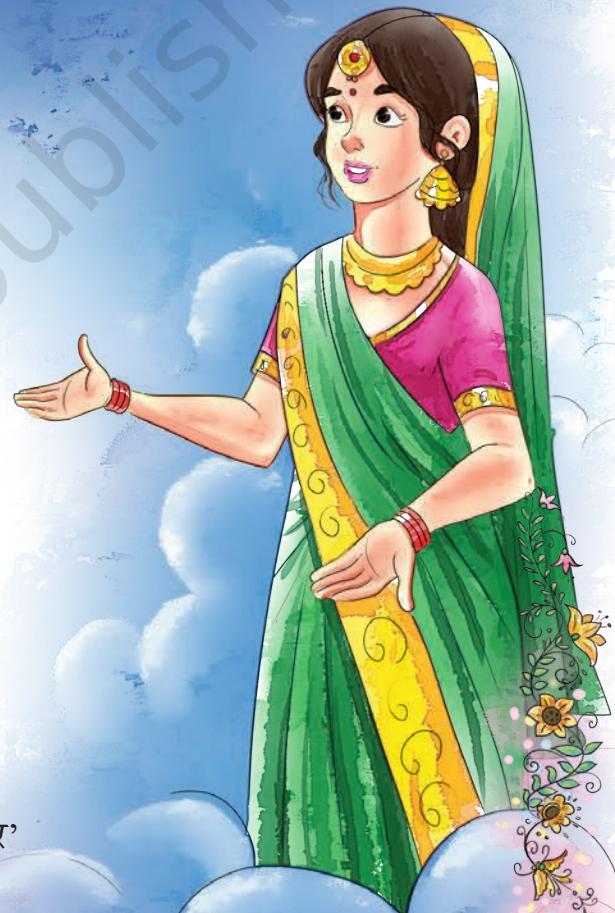
घटता-बढ़ता रोज किसी दिन ऐसा भी करता है,

नहीं किसी की भी आँखों को दिखलाई पड़ता है।

अब तू ही तो बता, नाप तेरी किस रोज लिवाएँ,

सी दें एक झिंगोला जो हर रोज बदन में आए?”

— रामधारी सिंह ‘दिनकर’



चाँद का कुरता

23



बातचीत के लिए

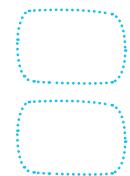
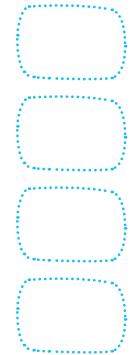
- आकाश आपको कब-कब बहुत सुंदर दिखाई देता है और क्यों?
- चाँद को ठंड लगती है इसलिए वह झिंगोला माँग रहा है। सूरज क्या कहकर अपनी माँ से कपड़े माँगेगा?
- आपने आकाश में क्या-क्या परिवर्तन होते देखे हैं?
- जब आप अपने अभिभावक के साथ नए कपड़े खरीदने जाते हैं तब किन-किन बातों का ध्यान रखते हैं?



कविता से

नीचे दिए गए प्रश्नों में चार विकल्प हैं। इनमें एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं। सही विकल्प पर चाँद का चित्र (🌙) बनाइए—

- चाँद की माँ उसे झिंगोला क्यों नहीं दे पा रही है?
 - चाँद के पास पहले से ही बहुत से झिंगोले हैं।
 - चाँद के शरीर का आकार घटता-बढ़ता रहता है।
 - चाँद अपने वस्त्र संभालकर नहीं रखता है।
 - चाँद की माँ अभी कोई नया वस्त्र नहीं सिलवाना चाहती है।
- कविता में चाँद के बदलते आकार का वर्णन करने के लिए किन शब्दों का प्रयोग किया गया है?
 - एक अंगुल-भर चौड़ा
 - एक फुट मोटा
 - किसी दिन बड़ा
 - किसी दिन छोटा



3. कविता में ठंड के मौसम का वर्णन करने के लिए किन-किन शब्दों का प्रयोग किया गया है?
- (क) ऊन का मोटा झिंगोला (ख) सन-सन चलती हवा
- (ग) ठिठुर-ठिठुरकर यात्रा (घ) भाड़े का कुरता



सोचिए और लिखिए

- कविता की किन पंक्तियों से पता चलता है कि चाँद किसी एक दिन बिलकुल दिखाई नहीं देता है?
- सर्दी से बचने के लिए चाँद, माँ से ऊन के झिंगोले के अतिरिक्त और कौन-से कपड़े माँग सकता है?
- जाड़े के मौसम में चाँद को क्या कठिनाई होती है?
- चाँद किस यात्रा को पूरा करने की बात कर रहा है?



अभिभावक और आप

जब नीचे दी गई बातें एवं घटनाएँ होती हैं तब आपके अभिभावक क्या-क्या कहते या करते हैं? अपने-अपने अनुभव कक्षा में साझा कीजिए।

- 😊 जब आप ठंडी रात में सोते समय अपने पैरों से कंबल या रजाई उतार फेंकते हैं।
- 😊 जब आप ठंड में आइसक्रीम खाने का हठ करते हैं।
- 😊 जब आप दूध पीने, हरी सब्जियाँ और फल आदि खाने से कतराते हैं।
- 😊 जब आप देर तक सोते हैं।
- 😊 जब कोई आपके घर आपकी शिकायत करने आता है।
- 😊 जब आपके अच्छे कामों के लिए आपकी प्रशंसा होती है अथवा पुरस्कार मिलता है।





अनुमान और कल्पना



- आप अपनी माँ से चाँद का दुखड़ा कैसे बताएंगे?
- गरमी और वर्षा से बचने के लिए चाँद अपनी माँ से क्या कहेगा? वह किस प्रकार के कपड़ों एवं वस्तुओं की माँग कर सकता है?
- चाँद ने माँ से कुरता किराए पर लाने के लिए क्यों कहा होगा?
- यदि माँ ने चाँद का कुरता सिलवा दिया होता तो क्या होता?



भाषा की बात



- “सन-सन चलती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूँ” कविता की इस पंक्ति में ‘भर’ शब्द का प्रयोग किया गया है। अब आप ‘भर’ की सहायता से पाँच वाक्य अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए, जैसे – पानी गिलास भर है, उसने दिन भर पढ़ाई की आदि
- नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यान से पढ़िए—
 (क) “ठिठुरकर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ”
 (ख) “ठिठुर-ठिठुरकर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ”

अपनी बात पर बल देने के लिए हम इस प्रकार के कुछ शब्दों का प्रयोग दो बार करते हैं, जैसे – जल्दी चलो, जल्दी-जल्दी चलो आदि। अब आप ऐसे ही पाँच वाक्य अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

- नीचे दी गई कविता की पंक्तियों में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया पहचानकर उन्हें दिए गए स्थानों में लिखिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

पंक्ति	संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया
हठ कर बैठा चाँद एक दिन, माता से यह बोला।	हठ, चाँद, दिन, माता	यह	एक	कर बैठा, बोला

आसमान का सफर और यह मौसम है जाड़े का।				
सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला।				
ठिठुर-ठिठुरकर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।				



चाँद का झिंगोला

1. मान लीजिए कि चाँद, झिंगोले के लिए माँ, कपड़े के दुकानदार और दर्जी से संवाद करता है। बातचीत के कुछ अंश नीचे दिए गए हैं। आप इन्हें आगे बढ़ाइए। आप संवाद अपनी मातृभाषा में भी लिख सकते हैं।

चाँद और माँ का संवाद

चाँद: माँ, मुझे बहुत ठंड लगती है। मेरे लिए एक मोटा झिंगोला
सिलवा दो!

माँ: तुझे सच में ठंड सताती होगी लेकिन एक समस्या है।

चाँद: समस्या? कैसी समस्या, माँ?

माँ: तेरा आकार तो प्रतिदिन बदलता है। कभी छोटा,
कभी बड़ा, कभी एकदम गायब! मैं कैसे नाप लूँ?

चाँद: (सोचकर) ऐरे हाँ! लेकिन फिर भी कोई उपाय तो होगा?

माँ:

चाँद:

माँ:

चाँद:



चाँद और कपड़े का दुकानदार

चाँद: दुकानदार जी, मुझे एक गरम कपड़ा चाहिए
जिससे मेरी सर्दी दूर हो जाए।

दुकानदार: अवश्य, कितने मीटर चाहिए?

चाँद: यहीं तो समस्या है! मैं कभी छोटा होता हूँ, कभी
बड़ा। आप ही बताइए... कितने मीटर लूँ?

दुकानदार: (हँसकर) अरे छोटू चाँद! जब आपका नाप ही तय
नहीं तो कपड़ा कैसे दूँ? पहले नाप तो तय करके आओ!

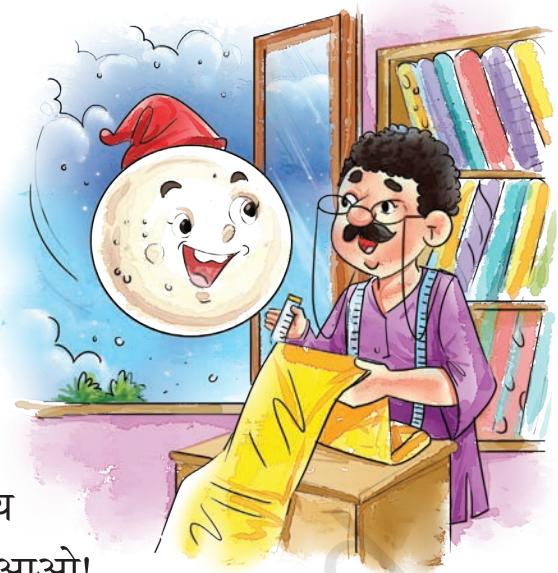
चाँद:

दुकानदार:

चाँद:

दुकानदार:

चाँद:



चाँद और दर्जी का संवाद

चाँद: दर्जी जी, मेरे लिए एक कुरता सिल दीजिए।

दर्जी: बिलकुल! लेकिन पहले नाप तो दो।

चाँद: यहीं तो समस्या है! कभी मैं छोटा, कभी बड़ा हो जाता हूँ।

दर्जी: (हँसते हुए) तो फिर ऐसा करो, प्रतिदिन मेरे पास आओ
और मैं प्रत्येक दिन तुम्हारे नाप का नया कुरता सिल दूँगा!

चाँद: (प्रसन्न होते हुए) फिर तो मुझे प्रतिदिन नए कपड़े मिलेंगे!
लेकिन माँ मानेंगी नहीं!



दर्जी:

चाँद:

दर्जी:

चाँद:

2. अब आप इन संवादों पर कक्षा में शिक्षक की सहायता से अभिनय कीजिए।



कविता से आगे



1. क्या चाँद की तरह आप भी अपनी माँ से किसी वस्तु के लिए हठ करते हैं? आप अपनी माँ को इसके लिए कैसे मनाते हैं?
2. आपकी माँ आपको किसी काम के लिए कैसे मनाती हैं?
3. गरमी, सर्दी या वर्षा से बचने के लिए आपकी माँ आपको क्या कहती अथवा क्या-क्या करती हैं?



सोचिए, समझिए और बताइए



1. कविता में चाँद अपनी माँ से बातें कर रहा है। मान लीजिए कि चाँद बोल नहीं सकता। अब वह अपनी माँ को अपनी बात कैसे बताएगा?
2. मान लीजिए कि चाँद का एक मित्र है जो देख नहीं सकता। चाँद उसे अपने बदलते हुए आकार के बारे में कैसे समझाएगा?



पढ़िए और समझिए



1. चाँद के लिए कुरता सिलना एक कठिन कार्य है। इसलिए चाँद की माँ ने उसका कुरता सिलवाने के लिए एक विज्ञापन प्रकाशित किया है। इसे पढ़िए और इसका प्रचार-प्रसार कर चाँद की माँ की सहायता कीजिए—

चाँद का कुरता

29



विज्ञापन

चाँद की माँ की विशेष घोषणा!

क्या आप हैं सबसे कुशल दर्जी?

क्या आप सिल सकते हैं ऐसा कुरता जो प्रतिदिन बदलते आकार में भी फिट आए?

समस्या: मेरा बेटा चाँद कभी एक अंगुल-भर छोटा तो कभी एक फुट मोटा हो जाता है। उसके लिए एक ऐसा कुरता चाहिए जो हर दिन उसके शरीर में फिट बैठ सके।

आवश्यकता

ऐसा कुरता जो अपने-आप छोटा-बड़ा हो सके

उन का मोटा झिंगोला ताकि ठंड से बच सके

यदि कुरता नहीं बन सकता तो भाड़े का भी चलेगा!

पुरस्कार

जो भी दर्जी इस अद्भुत कुरते को सिलने में सफल होगा, उसे मिलेगा विशेष पुरस्कार!

स्थान: चाँद की माँ का घर

संपर्क करें: आकाशवाणी से संदेश भेजें

शीघ्र आवेदन करें क्योंकि चाँद ठंड से ठिठुर रहा है।

2. अब एक रोचक विज्ञापन तैयार कीजिए जिसमें आप अपने लिए कोई वस्तु मँगवा रहे हों।



आपकी कलाकारी

आइए, चाँद के लिए एक कुरता बनाएँ।

सामग्री: रंगीन कागज, गोंद, कैंची, गिलटर, कपड़े के छोटे टुकड़े

बनाने की विधि

- ★ चाँद का एक बड़ा चित्र बनाइए।
- ★ अब अलग-अलग रंगीन कागज या कपड़े के टुकड़ों से चाँद के लिए सुंदर कुरता तैयार कीजिए।
- ★ मिटर या सितारों की आकृति बनाकर उसे सजाइए।
- ★ अब तैयार कुरते को कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।



पुस्तकालय एवं अन्य स्रोत

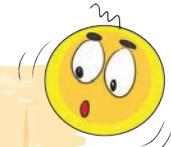
- पुस्तकालय में चाँद, सूरज, तारे, आकाश आदि पर बहुत-सी रोचक, मनोरंजक और ज्ञानवर्धक पुस्तकें अवश्य उपलब्ध होंगी। उन पुस्तकों को ढूँढ़कर पढ़िए और उनके बारे में कक्षा में भी चर्चा कीजिए।
- अपने शिक्षक, पुस्तकालय प्रभारी और मित्रों की सहायता से चाँद तथा सूरज की बदलती स्थितियों की और भी जानकारी प्राप्त कीजिए। यह भी पता लगाइए कि चंद्र ग्रहण एवं सूर्य ग्रहण कब-कब और क्यों होते हैं। आप अपने माता-पिता या अभिभावक से भी इनके बारे में बात कर सकते हैं।



बूझो तो जानें

तन है मेरा हरा-भरा,
रस से रहता सदा भरा।
भीतर से हूँ मैं लाल,
प्यास बुझाकर पूछूँ हाल।

हम दोनों हैं पक्के मित्र,
करते रहते काम विचित्र।
पाँच-पाँच सेवक हैं साथ,
लेकिन करते कभी न बात।



१५५ १५६ १५७ १५८ - १५९

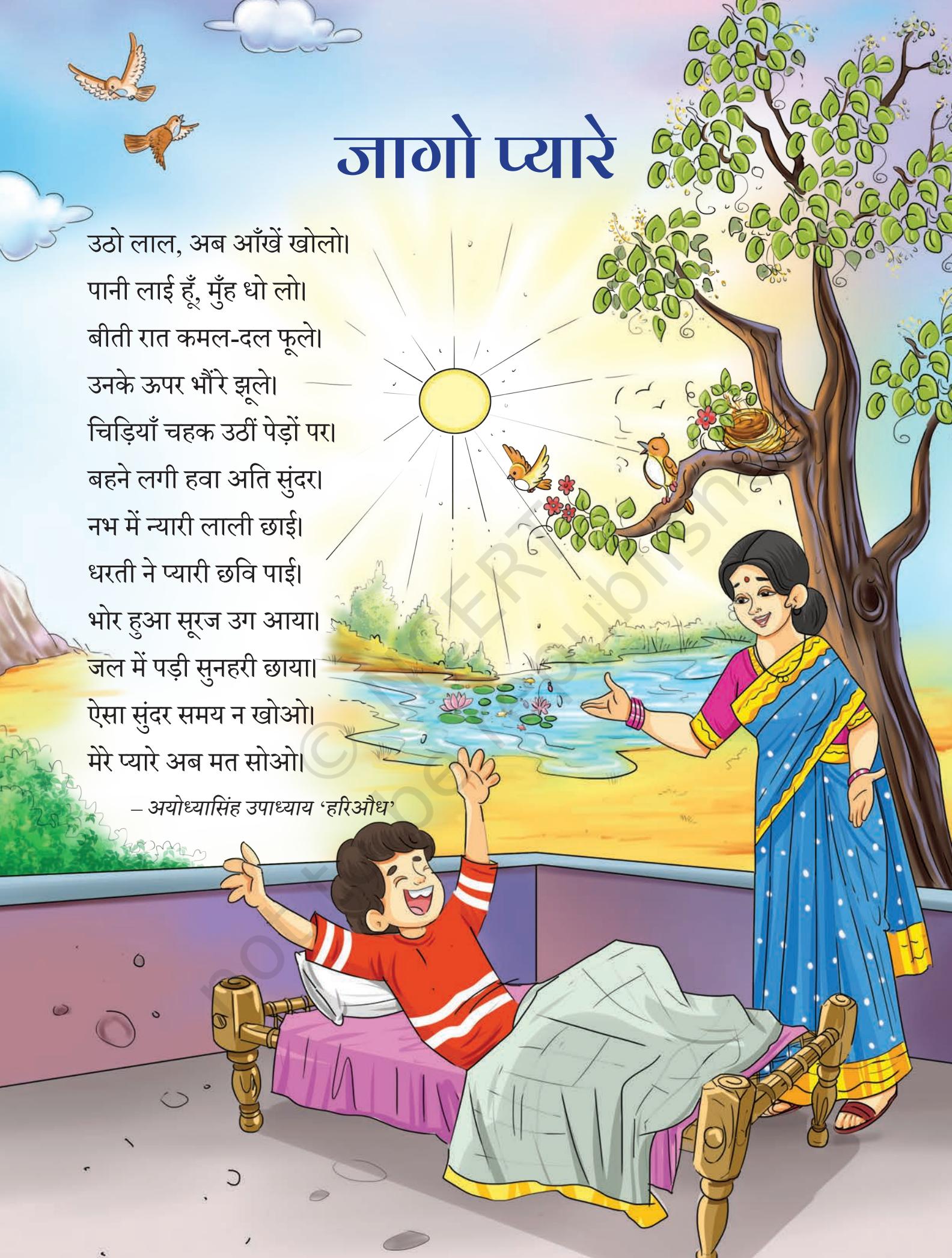
चाँद का कुरता

31

जागो प्यारे

उठो लाल, अब आँखें खोलो।
पानी लाई हूँ, मुँह धो लो।
बीती रात कमल-दल फूलो।
उनके ऊपर भौंरे झूलो।
चिड़ियाँ चहक उठीं पेढ़ों परा।
बहने लगी हवा अति सुंदरा।
नभ में न्यारी लाली छाई।
धरती ने प्यारी छवि पाई।
भोर हुआ सूरज उग आया।
जल में पड़ी सुनहरी छाया।
ऐसा सुंदर समय न खोओ।
मेरे प्यारे अब मत सोओ।

— अयोध्यासिंह उपाध्याय ‘हरिओध’





अरुणाचल प्रदेश में चौखाम के मंडल कार्यालय में वल्लरी के पिताजी एक अधिकारी हैं। इस बार उन्होंने दिल्ली से अपने परिवार को भी अपने पास बुला लिया है। कहाँ दिल्ली की भीड़भरी सड़कें, हॉर्न बजाती हुई कारें और बसें, आदमियों की लंबी-लंबी कतारें और कहाँ चौखाम का खुला और शांत वातावरण। जिधर देखो, हरियाली ही हरियाली और फूल ही फूल। यहाँ के लोगों के मुखों पर सदैव मुस्कान बनी रहती है।

एक दिन वल्लरी को उसके मित्र चाऊतान ने अपने घर बुलाया। वल्लरी अपने पिताजी के साथ चाऊतान के घर गई। उस समय चाऊतान के पिताजी घर की सफाई कर रहे थे। वल्लरी और उसके पिताजी को देखकर उन्होंने सफाई का काम छोड़ दिया और उन दोनों का स्वागत किया।

चाऊतान की माताजी कई प्रकार के पकवान ले आईं। ये पकवान बहुत स्वादिष्ट थे। वल्लरी और उसके पिताजी



पकवान खाने लगे। तभी वल्लरी ने देखा कि सड़क पर एक शोभायात्रा निकल रही है। शोभायात्रा में बहुत-से लोग थे। कुछ लोगों के कंधों पर पालकियाँ थीं। इन पालकियों में बड़ी-बड़ी और सुंदर-सुंदर मूर्तियाँ रखी हुई थीं। शोभायात्रा में सब लोग नाचते-गाते हुए जा रहे थे। लोगों में बहुत उत्साह था।



वल्लरी ने चाऊतान से पूछा, “ये लोग कहाँ जा रहे हैं? बहुत प्रसन्न दिख रहे हैं।”

चाऊतान ने बताया, “अभी एक-दो दिन पहले ही हमारे गाँव के लोगों ने नदी के किनारे एक मंदिर बनाया है। ये लोग बौद्ध-विहार से भगवान बुद्ध और उनके शिष्यों की मूर्तियाँ लाए हैं और इन्हें मंदिर ले जा रहे हैं। ये मूर्तियाँ तीन दिन तक उस मंदिर में रखी रहेंगी। गाँव के लोग इन मूर्तियों पर प्रतिदिन जल चढ़ाएँगे और इनकी पूजा करेंगे।”

“क्या हम लोग भी शोभायात्रा में सम्मिलित हो सकते हैं?” वल्लरी के पिताजी ने पूछा। “हाँ-हाँ, अवश्य। चलिए, हम सब शोभायात्रा में चलते हैं।” चाऊतान के पिताजी

बोले। सब लोग शोभायात्रा में सम्मिलित हो गए। शोभायात्रा में लोग गाते-बजाते हुए और नाचते-कूदते हुए चले जा रहे थे। उनकी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था।

थोड़ी देर में शोभायात्रा मंदिर के पास पहुँची। मंदिर की जालीदार दीवारें बाँस और बाँस की खपच्चियों से बनी हुई थीं। बीच-बीच में पेड़ों की हरी-भरी टहनियाँ लगाई गई थीं और खोंस-खोंसकर उन पर रंग-बिरंगे फूल सजा दिए गए थे। इतना सादा और सुंदर मंदिर वल्लरी ने पहले कभी नहीं देखा था।

देखते-देखते भीड़ मंदिर के द्वार पर एकत्रित होने लगी। बौद्ध भिक्षुओं ने मंत्र पढ़ते हुए इन मूर्तियों को पालकियों से उतारा और इन्हें मंदिर में रख दिया। अब वे इन मूर्तियों की पूजा करने लगे और इन पर जल चढ़ाने लगे।

हँसी-खुशी के इस वातावरण में वल्लरी ने देखा कि लोग एक-दूसरे पर बालटियाँ भर-भरकर पानी डाल रहे हैं। वे एक-दूसरे के चेहरों पर चावल का आटा भी लगा रहे हैं। वल्लरी को होली की याद आ गई। उसने चाऊतान से कहा, “चाऊतान भाई, लगता है कि लोग होली का त्योहार मना रहे हैं।” चाऊतान बोला, “तुम्हें मालूम नहीं, आज हमारे यहाँ साड़केन का त्योहार है। आज से हमारा नया वर्ष आरंभ होता है।”



वल्लरी ने बताया, “हमारे यहाँ भी होली से ही नया वर्ष आरंभ होता है। होली के दिन हम लोग भी एक-दूसरे के ऊपर रंगीन पानी फेंकते हैं और मुँह पर गुलाल लगाते हैं। होली के दूसरे दिन लोग एक-दूसरे से मिलने जाते हैं। उस दिन लोग घरों में कई प्रकार की मिठाइयाँ और नमकीन बनाते हैं और अतिथियों का स्वागत करते हैं।”

चाऊतान ने बताया, “आज शाम को हम लोग भी अपने ताऊजी के यहाँ जाएँगे। हमारी ताईजी ने भी विभिन्न प्रकार के पकवान बनाए होंगे। हम उन्हें प्रणाम करेंगे। वे हमें आशीर्वाद देंगे। कल मेरी बुआजी और मेरे फूफाजी भी हमारे यहाँ आएँगे।”

इतने में किसी ने वल्लरी और उसके पिताजी पर एक बालटी पानी डाल दिया। वे भीग गए। फिर तो लोग बहुत देर तक एक-दूसरे पर पानी डालते रहे और साड़केन मनाते रहे।

“तीन दिन तक इसी तरह साड़केन मनाया जाता है।” चाऊतान ने बताया। “तीसरे दिन बौद्ध भिक्षु इन मूर्तियों को पुनः पालकियों में रखकर बौद्ध-विहार ले जाएँगे। वहाँ वे मंत्र पढ़-पढ़कर इन मूर्तियों को इनके स्थान पर रख देंगे।”

चाऊतान के पिताजी ने बताया, “गाँव के लोग फिर बौद्ध-विहार जाएँगे और भिक्षुओं को बार-बार दंडवत प्रणाम करेंगे। भिक्षु लोग हमें आशीर्वाद देंगे —

“खेती फूले-फले तुम्हारी
तुम्हें न हो कोई बीमारी।
हिल-मिलकर सब नाचें-गाएँ,
नए साल में खुशी मनाएँ।”



बातचीत के लिए

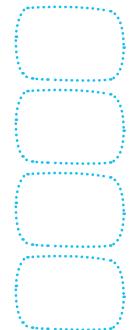
- त्योहारों पर घरों में कई प्रकार की मिठाइयाँ और नमकीन बनाई जाती हैं। आपको कौन-सी मिठाइयाँ और नमकीन अच्छी लगती हैं? वे किस त्योहार पर बनाई जाती हैं?
- आप कौन-से त्योहार मनाते हैं? उनमें और साड़केन में कौन-कौन सी समानताएँ हैं?
- हमारे देश में अनेक अवसरों पर शोभायात्राएँ (जुलूस) निकाली जाती हैं। आपने कौन-कौन सी शोभायात्राएँ देखी हैं? उनके बारे में अपने अनुभव बताइए।
- आप नया वर्ष कब और कैसे मनाते हैं?



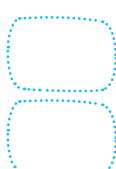
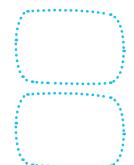
पाठ से

प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सामने तारे का चिह्न (★) बनाइए—

- साड़केन क्यों मनाया जाता है?
 - दीपावली पर्व के कारण
 - नव वर्ष प्रारंभ होने के उपलक्ष्य में
 - नए मंदिर के उद्घाटन की प्रसन्नता में
 - बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर
- भगवान बुद्ध का मंदिर कहाँ बना हुआ था?
 - चिकित्सालय के पास
 - नदी के किनारे
 - सरोवर के किनारे
 - समुद्र के किनारे
- लोग बहुत देर तक एक-दूसरे पर पानी डालते रहे क्योंकि—
 - उन्हें गरमी लग रही थी।
 - वे गंदे हो गए थे।
 - वे साड़केन मना रहे थे।



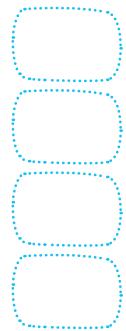
- सरोवर के किनारे
- समुद्र के किनारे



- वे स्नान कर रहे थे।
- वे साड़केन मना रहे थे।



4. “यहाँ के लोगों के मुखों पर सदैव मुस्कान बनी रहती है।” इस वाक्य का क्या अर्थ है?
- यहाँ के लोग सदैव प्रसन्न रहते हैं।
 - यहाँ के लोग सदैव प्रसन्न रहने का अभिनय करते हैं।
 - यहाँ के लोगों को खेलना-कूदना अच्छा लगता है।
 - यहाँ के लोगों को नाचना-गाना अच्छा लगता है।



पाठ से



1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए—

- साड़केन का त्योहार मनाते समय वल्लरी को होली की याद क्यों आई?
- वल्लरी को चौखाम और दिल्ली में क्या अंतर लगा?
- मंदिर की सजावट कैसे की गई थी?
- आपको कौन-कौन आशीर्वाद देते हैं? वे क्या आशीर्वाद देते हैं?

2. नीचे पाठ की कुछ पंक्तियों के भावार्थ दिए गए हैं। उदाहरण के अनुसार पाठ की उन पंक्तियों को लिखिए जो दिए गए भावार्थ पर आधारित हैं—

भावार्थ	पाठ की पंक्तियाँ
<p>शोभायात्रा में लोग बहुत प्रसन्न दिखाई दे रहे थे। मंदिर सुंदर सजा था।</p>	<p>शोभायात्रा में सब लोग नाचते-गाते हुए जा रहे थे। लोगों में बहुत उत्साह था।</p>
<p>ऐसा लगता है कि लोग होली का त्योहार मना रहे हैं। त्योहारों में सब एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं।</p>	<p>.....</p>





भाषा की बात

- 1. नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों के समानार्थी शब्दों का प्रयोग करते हुए अपनी लेखन-पुस्तिका में वाक्यों को पुनः लिखिए—**
 - (क) एक दिन वल्लरी को उसके मित्र चाऊतान ने अपने घर बुलाया।
 - (ख) हमारे गाँव के लोगों ने नदी के किनारे एक मंदिर बनाया है।
 - (ग) बीच-बीच में पेड़ों की हरी-भरी टहनियाँ सजाई गई थीं।
 - (घ) आज हमारे यहाँ साड़केन का त्योहार है।

- 2. दिए गए उदाहरण को समझकर वाक्यों को पूरा कीजिए—**
 - (क) जहाँ देखो हरियाली ही हरियाली और फूल ही फूल!
 - (ख) मैं समुद्र के किनारे गई, जहाँ देखो पानी!
 - (ग) मेरा गाँव केरल में है; जहाँ देखो नासियल के पेड़ !
 - (घ) मुंबई में जिधर देखो !
 - (ङ) की दुकान में जहाँ देखो !

- 3. रेखांकित शब्दों के वचन बदलकर वाक्य पूरा कीजिए—**
 - (क) शोभायात्रा में बड़ी मूर्ति की पालकी सबसे पीछे थी और छोटी मूर्तियों की पालकियाँ..... आगे थीं।
 - (ख) बाँस की खपच्चियाँ उधर रखी हैं, एक मुझे दे दीजिए
 - (ग) गंगा एक पवित्र नदी है। भारत में अनेक पवित्र हैं।
 - (घ) मेरे जन्मदिन पर कई प्रकार की मिठाइयाँ थीं लेकिन मुझे रसगुल्ले की सबसे अच्छी लगती है।
 - (ङ) सारी बालटियाँ पानी से भर गई हैं, केवल एक बची है।



4. जब किसी की बात ज्यों की त्यों लिखी जाती है तब एक चिह्न लगाया जाता है। इसे उद्धरण चिह्न कहते हैं। उदाहरण के लिए—

चाऊतान बोला, “आज से हमारा नया वर्ष आरंभ होता है।”

पाठ में आए ऐसे चार वाक्य खोजकर लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

5. पाठ में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। इन्हें हिंदी वर्णमाला के क्रम में लिखिए, जैसे—**कलम, खरगोश, गगन...**

करेला, समय, मठ, तट, नमकीन, जल, वन, मटका



पाठ से आगे



- आपके घर में त्योहारों के लिए कौन-कौन सी तैयारियाँ की जाती हैं?
- आपके घर पर त्योहारों के समय कौन-कौन, क्या-क्या काम करता है? सूची बनाइए।
- हमारे देश में लोग अनेक प्रकार से अभिवादन करते हैं। उदाहरण के लिए, ‘नमस्ते’ बोलकर। आपके राज्य में क्या बोलकर अभिवादन किया जाता है? एक सूची बनाइए—

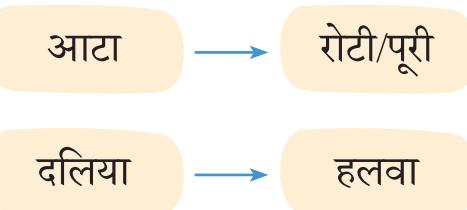
राज्य/केंद्रशासित प्रदेश	अभिवादन के लिए शब्द
दिल्ली	नमस्कार
.....
.....
.....
.....

इस कार्य के लिए आप अपने मित्रों, शिक्षकों और अभिभावकों की भी सहायता ले सकते हैं।



सोचिए और लिखिए

- इस पाठ में आपको सबसे अच्छा क्या लगा और क्यों?
- नीचे दिए गए उदाहरण को देखकर आगे की कड़ी बनाइए—

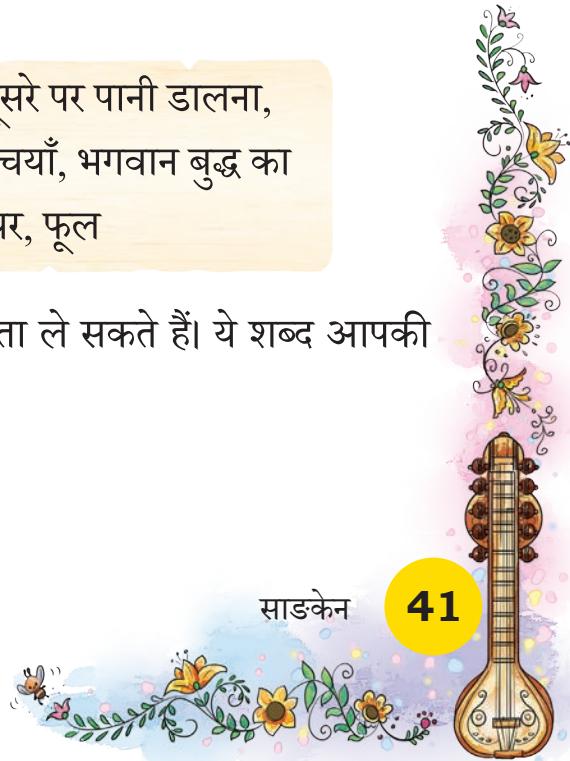


दूध
गना
चना
चावल

- अपने मित्र को साड़केन के बारे में पूरे दिन का आँखों-देखा वर्णन अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखकर बताइए। आपकी सहायता के लिए कुछ मुख्य संकेत बिंदु नीचे दिए गए हैं—

स्वागत, पकवान, शोभायात्रा, मूर्तियाँ, मंदिर, एक-दूसरे पर पानी डालना,
 मिल-जुलकर खुशी मनाना, पालकी, बाँस की खपच्चयाँ, भगवान बुद्ध का
 मंदिर, बौद्ध भिक्षु, होली, आशीर्वाद, घर, फूल

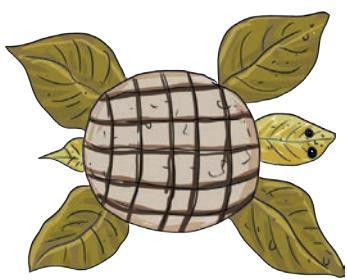
आप इन शब्दों के अतिरिक्त अन्य शब्दों की भी सहायता ले सकते हैं। ये शब्द आपकी अपनी भाषा से भी हो सकते हैं।





मेरी कलाकारी

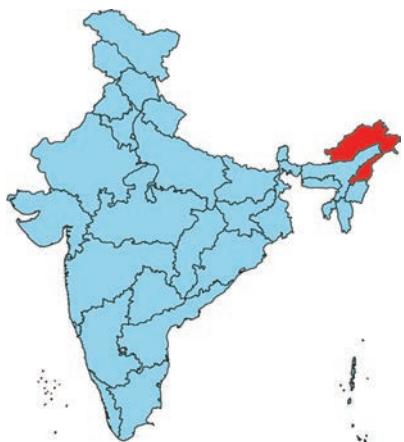
यहाँ कुछ प्राणियों के चित्र दिए गए हैं जिन्हें सूखे पत्तों से बनाया गया है। इन प्राणियों को पहचानिए और पत्तों से किसी भी प्राणी की आकृति बनाकर नीचे दिए गए स्थान पर चिपकाइए।





पुस्तकालय से

नीचे दिए गए बिंदुओं के आधार पर अरुणाचल प्रदेश के बारे में शिक्षकों और पुस्तकालय की सहायता से महत्वपूर्ण जानकारी जुटाइए।



राजधानी

पड़ोसी राज्य

भाषा

मुख्य फसल

त्योहार

नृत्य

परिधान



बूझो पहेली



ज्योति को उसके जन्मदिन पर मिठाई बनाने के लिए उसकी माताजी ने दूधवाले भैया के पास 5 लीटर दूध लेने भेजा। दूधवाले भैया के पास दूध को मापने के दो ही बरतन थे— एक 4 लीटर का और दूसरा 3 लीटर का। दूधवाला कभी इस बरतन में, कभी उस बरतन में और कभी पतीले में दूध डाल रहा था। ज्योति ध्यानपूर्वक यह सब देख रही थी। उसे उत्सुकता भी थी कि आखिर वह 5 लीटर दूध कैसे दे सकेगा?

दूधवाले भैया ने उसे 5 लीटर दूध दे दिया जिसे लेकर वह घर आ गई। शाम को जन्मदिन के उत्सव पर उसने मित्रों को यह रोचक बात बताई और उनसे पूछा कि बताओ दूधवाले ने उसे 5 लीटर दूध कैसे दिया होगा।

अब आप बताइए कि ज्योति ने अपने मित्रों को उत्तर में क्या बताया होगा?



शिक्षण-संकेत – गणित की इस पहेली का उत्तर बच्चों द्वारा अलग-अलग दिए जाने की संभावना है। अतः शिक्षक धैर्यपूर्वक बच्चों द्वारा दिए जाने वाले उत्तरों को सुनें और सही उत्तर तक पहुँचने में उनकी सहायता करें।

होली आई, होली आई

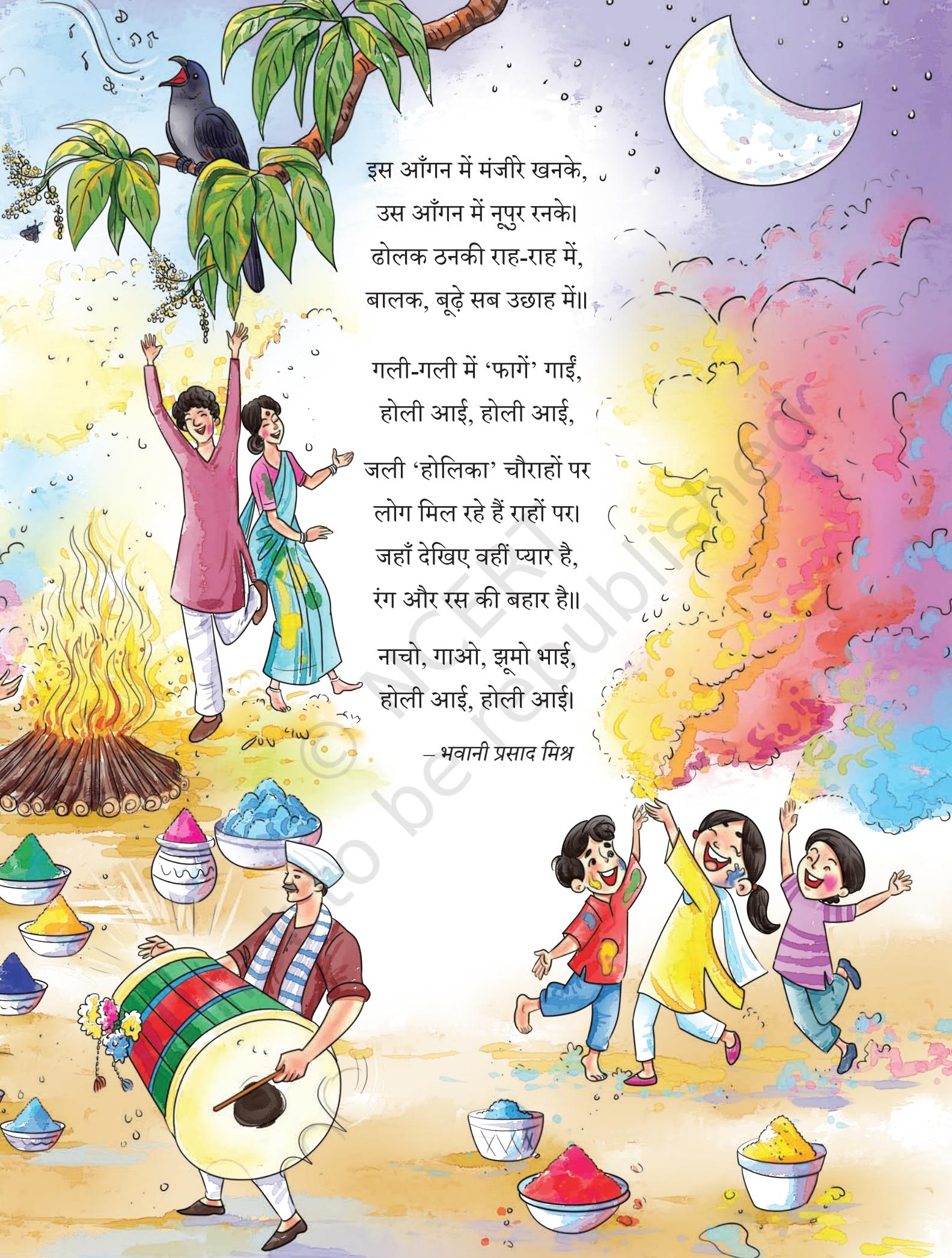
होली आई, होली आई
देखो तो यह क्या-क्या लाई?

खेतों में लाई है सोना,
चमक उठा उनका हर कोना।
सरसों फूली, गेहूँ लहका,
अमराई का आँगन महका॥

हवा नई होकर लहराई,
होली आई, होली आई,
कोयल कुहकी, गूँजे भौंरे,
पत्ते झूमे चिकने कौरे।
फूल गया टेसू जंगल में,
डूब गई दुनिया मंगल में॥

सूरज चंदा सब सुखदाई,
होली आई, होली आई,





इस आँगन में मंजीरे खनके,
उस आँगन में नूपुर रनके।
ढोलक ठनकी राह-राह में,
बालक, बूढ़े सब उछाह में॥

गली-गली में ‘फागें’ गाई,
होली आई, होली आई,
जली ‘होलिका’ चौराहों पर
लोग मिल रहे हैं राहों पर।
जहाँ देखिए वहीं प्यार है,
रंग और रस की बहार है॥
नाचो, गाओ, झूमो भाई,
होली आई, होली आई।

– भवानी प्रसाद मिश्र





सुंदरिया



हरियाणा के किसी गाँव में हीरासिंह नामक एक किसान था। उसकी समझ में यह नहीं आता था कि वह अपने बीवी-बच्चों और अपनी प्यारी गाय सुंदरिया की परवरिश कैसे करे?

सुंदरिया गाय डील-डौल में काफी बड़ी थी। उसे देखकर लोगों को ईर्ष्या होती थी। गरीबी के कारण हीरासिंह गाय का चारा भी नहीं जुटा पाता था। खाने-पीने की कमी होने लगी तो हीरासिंह ने सोचा — ‘मैं सुंदरिया को बेच दूँ?’ पर उसका बड़ा लड़का जवाहरसिंह सुंदरिया को मौसी कहा करता था। इसलिए वह उसे बेचने से डरता था।

नौकरी की तलाश में वह दिल्ली चला आया। वहाँ उसे एक सेठ के यहाँ चौकीदार की नौकरी मिल गई। एक रोज सेठ ने हीरासिंह से कहा — “तुम तो हरियाणा के रहने वाले हो। वहाँ की गायें अच्छी होती हैं। एक गाय का बंदोबस्त कर दो।”

हीरासिंह सुंदरिया की बात सोचने लगा। उसने कहा — “एक है मेरी निगाह में।”

सेठ ने कहा — “कैसी गाय है?”

हीरासिंह बोला — “गाय तो ऐसी है कि दूध देने में कामधेनु। पंद्रह सेर दूध उसके तले उतरता है। उसके दो सौ रुपए तक लग चुके हैं।”

सेठ बोला — “चलो, पाँच हम ज्यादा दे देंगे?”



हीरासिंह ने तब साफ-साफ ही कह दिया — “सेठ जी, सच यह है कि वह गाय अपनी ही है।”

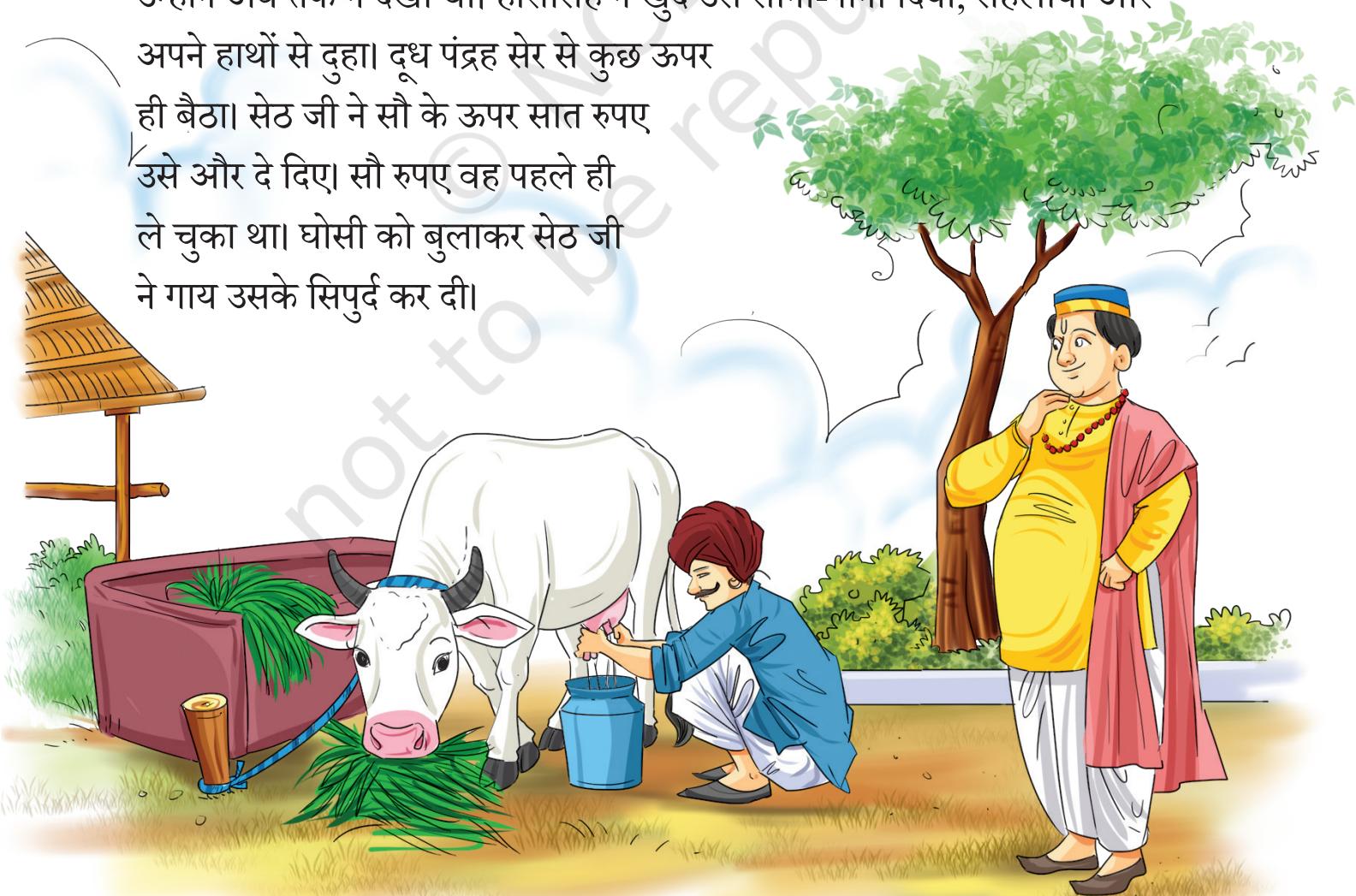
सेठ जी ने खुश होकर कहा — “तब तो अच्छी बात है। तुम्हारे लिए जैसे दो सौ, वैसे दो सौ पाँच।”

हीरासिंह लाज से गड़ गया कि वह कैसे बताए कि सुंदरिया उसके परिवार का अंग है। पर उसने सोचा कि सेठ के यहाँ रहकर गाय तो उसकी आँखों के आगे रहेगी। सेठ ने सौ रुपए मँगाकर उसी वक्त हीरासिंह को थमा दिए। कहा — “देखो हीरासिंह, आज ही चले जाओ। कब तक वापस आ जाओगे?”

हीरासिंह ने कहा — “पाँच दिन तो लगेंगे ही।”

सेठ जी ने कहा — “पर ज्यादा दिन मत लगाना।”

हीरासिंह उसी रोज गाय लेने चला गया। जैसे-तैसे जवाहरसिंह को समझा-बुझाकर वह गाय ले आया। गाय देखकर सेठ बहुत खुश हुए। सचमुच वैसी सुंदर, स्वस्थ गाय उन्होंने अब तक न देखी थी। हीरासिंह ने खुद उसे सानी-पानी दिया, सहलाया और अपने हाथों से दुहा। दूध पंद्रह सेर से कुछ ऊपर ही बैठा। सेठ जी ने सौ के ऊपर सात रुपए उसे और दे दिए। सौ रुपए वह पहले ही ले चुका था। घोसी को बुलाकर सेठ जी ने गाय उसके सिपुर्द कर दी।



रूपए तो ले लिए लेकिन हीरासिंह का जी भरा जा रहा था। जब घोसी गाय को ले जाने लगा, तब गाय उसके साथ जाना ही नहीं चाहती थी।

हीरासिंह बोला — “गाय की नौकरी पर मुझे लगा दीजिए। चाहे तनख्वाह कम कर दीजिए।”

सेठ जी ने कहा — “हीरासिंह, तुम्हारे जैसा ईमानदार चौकीदार हमें दूसरा कहाँ मिलेगा? तनख्वाह तो तुम्हारी हम एक रुपया और भी बढ़ा सकते हैं, पर तुमको ड्योढ़ी पर ही रहना होगा।”

हीरासिंह क्या कहता! उसने गाय को पुचकारकर कहा — “सुंदरिया जाओ, जाओ।”

गाय ने उसकी ओर देखा। जैसे पूछना चाहती थी — “क्या सचमुच ही इसके साथ चली जाऊँ?”

हीरासिंह ने उसे थपथपाया तो वह घोसी के पीछे-पीछे चली गई। हीरासिंह एकटक देखता रहा। लेकिन अगले दिन गडबड़ हुई। सेठ जी ने हीरासिंह को बुलाकर कहा — “तुमने मुझे धोखे में क्यों रखा? गाय से सवेरे पाँच सेर दूध भी तो नहीं उतरा।”

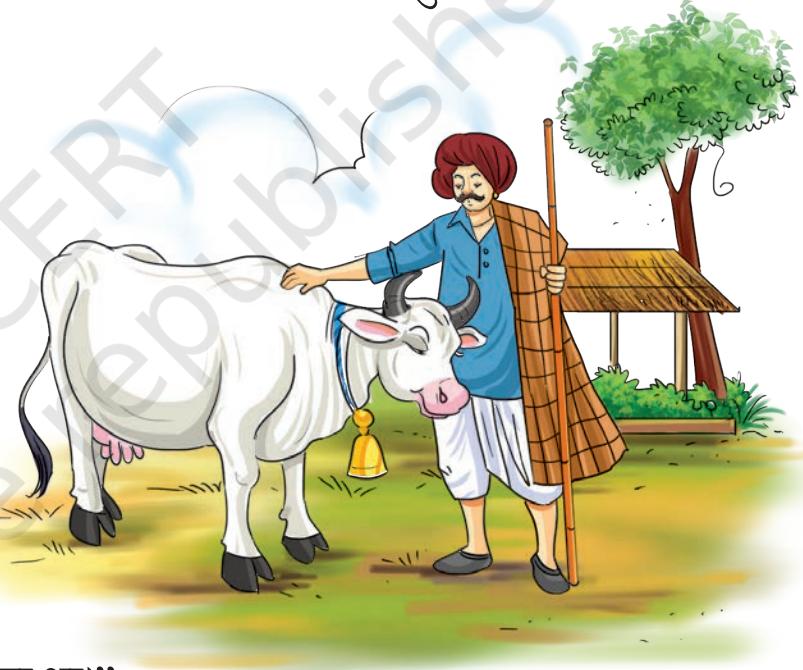
हीरासिंह ने कहा — “मैंने खुद पंद्रह सेर से ऊपर दूध दुहकर आपको दिया था।”

सेठ जी ने कहा — “तो जाकर गाय को देखो।”

हीरासिंह गाय के पास गया। पुचकारकर कहा — “सुंदरिया, मेरी रुसवाई क्यों कराती है?”

गाय ने मुँह ऊपर उठाया मानो पूछ रही हो — “बोलो मुझे क्या करना है?”

हीरासिंह ने घोसी से कहा — “बालटी लाओ।”



घोसी ने कहा — “मैं तो पहले ही दुह चुका हूँ”
 “पर तुम बालटी तो लाओ।” हीरासिंह बोला।
 उसके बाद साढ़े तेरह सेर दूध उसके तले से तोलकर हीरासिंह ने घोसी को दे दिया। कहा — “यह दूध सेठ जी को दे देना।” फिर गाय के गले पर सिर रखकर बोला — “सुंदरिया, देख... मेरी ओछी मत करा। मैं दूर हूँ तो क्या! इसमें मुझे सुख है?”

गाय मुँह झुकाए वैसी ही खड़ी रही। दूसरे दिन फिर वही हुआ। लाख कोशिश के बाद भी गाय ने पूरा दूध नहीं दिया। सेठ जी ने हीरासिंह को बुलाकर कहा — “क्यों हीरासिंह, यह क्या है? यह तो सरासर धोखा है।” हीरासिंह चुप रहा।

सेठ जी ने कहा — “ऐसा ही है तो ले जाओ अपनी गाय और मेरे रूपए वापस करो।”

लेकिन रूपए हीरासिंह गाँव भेज चुका था। उसमें से काफी रूपया मकान की मरम्मत में लग गया था। अब सेठ जी को देने के लिए रूपए कहाँ से लाए?

उसे चुप देख, सेठ जी बोले — “अच्छा, तनख्वाह में से रकम कटती जाएगी। जब पूरी हो जाएगी तो अपनी गाय ले जाना।”

अगले दिन सवेरे बहुत-सा दूध ड्योढ़ी में बिखरा हुआ था। उससे पहली शाम गाय ने दूध देने से बिलकुल इनकार कर दिया था।

सेठ जी ने पूछा — “हीरा, यह क्या बात है?” हीरासिंह सिर झुकाकर रह गया।

फिर उसने पूछा — “रात गाय खुली तो नहीं रह गई थी? आप इसकी खबर तो लीजिए।”



घोसी को बुलाकर पूछा गया तो उसने कहा — “कल रात मैंने गाय को खुद खूँटे से बाँधा था।”

हीरासिंह ने कहा — “नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। गाय रात को आकर ड्योढ़ी में खड़ी रही है और अपना दूध गिरा गई है।”

सेठ जी बोले — “ऐसी मसनूई बातें औरों से कहना। जाओ, खबर लगाओ कि वह कौन आदमी है, जिसकी करतूत है?”

हीरासिंह चुपचाप अपनी कोठरी में जाकर लुढ़क गया। कब आँख लगी, कुछ पता नहीं। रात को अचानक लगा कि दरवाजे की ओर से रगड़ की आवाज आई। उठकर दरवाजा खोला। देखा, सुंदरिया खड़ी है। मुँह ऊपर उठाकर सुंदरिया उसे अपराधी की आँखों से देख रही थी। मानो क्षमा याचना कर रही हो। जैसे कहती हो — ‘मैं अपराधिनी हूँ लेकिन मुझे क्षमा कर देना। मैं बड़ी दुखिया हूँ।’

देखकर हीरासिंह विहृवल हो उठा। उसके आँसू रोके न रुके। वह सुंदरिया की गर्दन से लिपट देर तक सिसकता रहा।

अगले सवेरे उसने सेठ जी से कहा —
“आप मुझसे जितने महीने चाहें कसकर चाकरी करवाएँ, पर गाय आज ही यहाँ से गाँव चली जाएँगी। रुपए जब आपके चुकता हो जाएँ, मुझसे कह दीजिएगा। तब मैं भी छुट्टी कर लूँगा।”

और सेठ जी कुछ कहें, इससे पहले ही हीरासिंह गाय को लेकर चल दिया।

— जैनेंद्र कुमार



शिक्षण-संकेत — इस कहानी में कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग हुआ है जो प्रारंभिक हिंदी में प्रचलित थे। उदाहरण के लिए सिपुर्द, रुसवाई, मसनूई आदि। इनका अर्थ क्रमशः सौंपना, अपमान और बनावटी है। शिक्षक, बच्चों को ऐसे अन्य शब्द उनके अर्थ सहित शब्दकोश की सहायता से ढूँढ़ने तथा वाक्यों में प्रयोग करने के लिए प्रेरित करें।